CHAPTER 3

(क) यह दीप अकेला

(ख) मैंने देखा एक बूंद

PAGE 18 , प्रश्न और अभ्यास

यह दीप अकेला

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:1

'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए बताइए कि उसे कवि ने स्नेह भरा, गर्व भरा एवं मदमाता क्यों कहा है?

उत्तर: इस कविता में कवि सच्चिदानंद हीरानंद जी दीप तथा मनुष्य की तुलना करते हुए मनुष्य को समाज का हिस्सा बनाने के लिए कहते है। कवि कहते है कि दीप अकेला रहता है तो वह पुर्रे संसार में प्रकाश नहीं दे पता है परन्तु जब वह दीपों के पंक्ति में शामिल कर दिया जाता है तो उसके प्रकाश की तरिव्रता बढ़ जाती है। दीप की लौ स्नेह तथा गर्व से भरी हुयी है। यह हिलती - डुलती है तो मदमाती हुयी प्रतीत होती है। मनुष्य दीप के समान ही स्नेह से भरा हुआ अहंकारी है ।

परन्तु जब उसे समाज के साथ जोड़ लिया जाता है तब उसके अन्दर का प्रकाश संसार को प्रकाशित करता है।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:2

यह दीप अकेला है 'पर इसको भी पंक्ति को दे दो' के आधार पर व्यष्टि का समिष्ट में विलय क्यों और कैसे संभव है?

उत्तर: प्रस्तुत कविता में दीप को मनुष्य के तथा पंक्ति शब्द को समाज प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है। दीप को पंक्ति में रखने का तात्पर्य है मनुष्य को समाज में सम्मिलित करना। कवि कहते है की व्यष्टि का समिष्टि में विलय आवश्यक है। जब मनुष्य अकेला होता है तब वह अहंकार से भरा हुआ होता है । उसके अहंकारी स्वाभाव के कारण वह संसार को सही दिशा नहीं दिखा पाता है । जब उसे समाज में सम्मिलित कर लिया जाता है तो वह संसार तथा समाज का कल्याण करता है। इस संसार को अपने अन्दर के प्रकाश से प्रकाशित करता है। व्यष्टि का समिष्ट में विलय इसी प्रकार संभव है।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:3

'गीत' और 'मोती' की सार्थकता किससे जुड़ी है?

उत्तर: गीत की सार्थकता गायन से जुड़ी है। इसी प्रकार मोती की सार्थकता तभी है जब गोताखोर उसे निकाल कर बाहर ले आये। पन्ने पर लिखे गीत की कोई पहचान नहीं है। पहचान तब बनती है जब गीत को गाया जाता है। उसी प्रकार समुद्र के अंदर पड़े मोती का कोई मूल्य नहीं है। उसका मूल्य तभी है जब उसे गोताखोर बाहर निकाल के लाये।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:4

'यह अद्‌वितीय-यह मेरा-यह मैं स्वयं विसर्जित'- पंक्ति के आधार पर व्यष्टि के समष्टि में विसर्जन की उपयोगिता बताइए।

उत्तर: कवि कहते है की जव व्यष्टि में समष्टि का विसर्जन होता है तो मनुष्य के अंदर से अहंकार और "मैं" की भावना समाप्त हो जाती है । कहने का तात्पर्य यह है कि स्वंम के

अभिमान और 'मैं' की भावना को मनुष्य समाज में सम्मिलित होने के बाद अपने हाथों से विसर्जित कर देता है । इस विसर्जन को ही व्यष्टि के समष्टि में विसर्जन कहा गया है। इसकी उपयोगिता यह है कि अभिमान के विसर्जन के बाद मनुष्य समाज के लिए कल्याणकारी अकार्य करता है तथा संसार को अपने प्रश् से प्रकशित करता है।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:5

'यह मधु है .... तकता निर्भय'- पंक्तियों के आधार पर बताइए कि 'मधु', 'गोरस' और 'अंकुर' की क्या विशेषता है?

उत्तर: कवि सच्चिदानंद के अनुसार-

'मधु' की विशेषता यह है कि उसे बनाने में मधुमखियों को बहुत समय लगता है।

'गोरस' की प्राप्ति कामधेनु गाय से होती है जिसका दूध अमृत के सामान है।

'अंकुर' की विशेषता यह होती है कि वह बहुत ही शक्तिशाली होता है। कठोर भूमि को चीरकर बहार निकल आता है।

12:1:3: प्रश्न और अभ्यास:6

भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) 'यह प्रकृत, स्वयंभू .... शक्ति को दे दो।'

(ख) 'यह सदा-द्रवित, चिर-जागरूक .... चिर-अखंड अपनापा।'

(ग) 'जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय, इसको भक्ति को दे दो।'

उत्तर:

(क) भाव सौंदर्य :- इसके भाव है की मनुष्य यदि हाथ से हाथ मिलाकर समाज या संसार का कल्याण करना शुरु करे तो पूरा विश्व एक हो सकता है। अकेले एक व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता है सारे विश्व को एक साथ मिलाकर काम करना होगा।

(ख) भाव सौंदर्य :- इसमें कवि ने कहा है की मनुष्य और दीपक दोनों एक जैसे है। जैसे दीपक द्रव्य से जल कर प्रकशित होता है अर्थात अन्धकार ख़त्म करने के लिए द्रवित होकर जलता है। उसी प्रकार मनुष्य दुसरो के दुख

देखकर द्रवित हो जाता है और उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ता है।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:7

'यह दीप अकेला' एक प्रयोगवादी कविता है। इस कविता के आधार पर 'लघु मानव' के अस्तित्व और महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: वाद शब्द के कारन कविताओं में कई युगों का निर्माण हुआ है जैसे छायावाद , रहस्यवाद , प्रयोगवाद और हालावाद। यह विशुद्ध रूप से प्रयोगात्मक कविता है। प्रायोगिक कविता वह है जो न केवल कल्पनाशील है बल्कि आधुनिकीकरण और तथ्यों से भरी है। कवि का तात्पर्य है कि यदि मनुष्य स्वयं को छोटा या तुच्क्ष सकमझाता है तो वह कभी सफलता की दिशा को प्राप्त नहीं कर सकता है। एक अकेला दीपक घर आंगन को प्रकाशित कर सकता है परन्तु पुरे विश्व को अकेले नहीं प्रकाशित कर सकता। उसी प्रकार मनुष्य को भी दीपक से सीखना चाहिए की यदि वो अकेला है तो भी वह अपने घर आँगन संभाल सकता है। परन्तु यदि वह पुरे विश्व को प्रकाशित करना चाहता है तो उसे दीपक की

तरह पंक्ति में शामिल हो होगा। पंक्ति में शामिल हो कर वह कुछ भी कर सकता है। वह दीपक से साहस और शौर्य की प्रेरणा ले सकता है ।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:1

'सागर' और 'बूँद' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर: सागर और बूंद द्‌वारा कवि अज्ञेय का अर्थ है कि एक बूंद अचानक समुद्र के किनारे से अलग हो जाती है और सूर्यास्त के समय सुनहरी आभा उस बूंद पर फैल जाती है और एक पल के लिए यह एक सुनहरे रूप से चमकती है। फिर यह सागर में गायब हो जाता है। कवि संसार की नश्वरता का विलक्षण उदहारण प्रस्तुत करते है।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:2

'रंग गई क्षणभर, ढलते सूरज की आग से'- पंक्ति के आधार पर बूँद के क्षणभर रंगने की सार्थकता बताइए।

उत्तर: इन पंक्तियों का अर्थ यह है कि जब समुद्र से बूंद उठती है और डूबती आभा की सुनहरी लालिमा बूँद पर आग की तरह दिखाई देती है। कवि कहना चाहते है कि समुद्र में विलीन होते वक़्त अद्भुत लालिमा लिए हुए होती है। उसी प्रकार नश्वर जीवन परमात्मा में विलीन होते वक़्त ज्योतिर्मय होनी चाहिए।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:3

'सूने विराट के सम्मुख...............दाग से!'- पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि अज्ञेय के इन पंक्तियों का भाव यह है कि विराट परब्रह्म जिसने समपूर्ण श्रृष्टि की रचना की है। उसके सामने समुद्र से कूदते हुए एक बूँद अस्त होते सूर्य से सुनहरी आभा पाती है। बूँद सुनहरी हो जाती है और उस शानदार विराट प्रभु से मिलने के बाद उनमें विलीन हो जाता है।

12:1:3:प्रश्न और अभ्यास:4

'क्षण के महत्व' को उजागर करते हुए कविता का मूल भाव लिखिए।

उत्तर: क्षण का मूल भाव है की जीवन के हर क्षण को अमूल्य बनाना चाहिए। डूबता सूर्य से बून्द ज्योर्तिमय होकर फिर उसी में विलीन हो जाती है।